

# प्रतिवेदन

राज्य स्तरीय कार्यशाला  
पर्यावरण संरक्षण एवं जनचेतना

05,06 अप्रैल 2016

संरक्षक/प्राचार्य  
डॉ. उषा दुबे

समन्वयक

डॉ. श्रीमती आशा पाण्डे

आयोजक

आंतरिक गुणवत्ता आश्वस्ति प्रकोष्ठ

प्रायोजक

यू.जी.सी. प्रकोष्ठ

शासकीय मानकुवंर बाई कला एवं वाणिज्य  
स्वशासी महिला महाविद्यालय जबलपुर (म.प्र.)

नेक द्वारा प्रदत्त 'A' ग्रेड

①



उद्घाटन सत्र के मुख्य वक्ता डॉ. आर.के. श्रीवास्तव का उद्बोधन

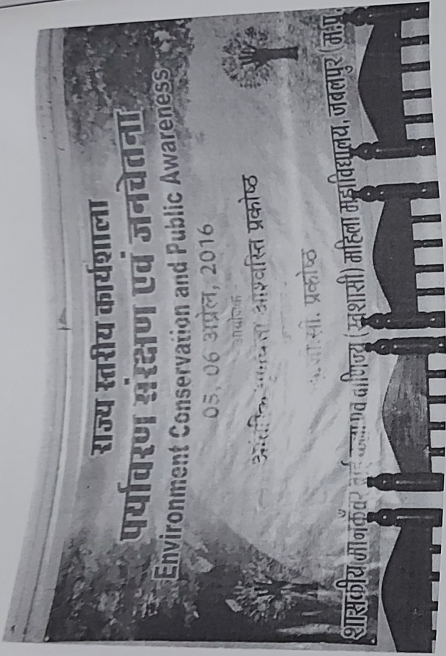


उद्घाटन सत्र पर मंचासीन अतिथिगण प्राचार्य डॉ. उषा दुबे, आई.क्यू.ए.सी. प्रभारी डॉ. आशा पाण्डे, मुख्य अतिथि पूर्व प्राचार्य डॉ. निशा तिवारी एवं विशिष्ट अतिथि डॉ. एस.के. खरे

## उद्घाटन सत्र -

उद्घाटन सत्र की मुख्य अतिथि पूर्व प्राचार्या डॉ. निशा तिवारी थी। अध्यक्षता प्राचार्य डॉ. उषा दुबे ने की, इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित डॉ. आर. के. श्रीवास्तव ने अपने उद्बोधन में कहा कि पर्यावरण को व्यापक रूप से परिभाषित किया जाना चाहिए। पर्यावरणीय व्यवस्था को साम्य अवस्था में रखने हेतु हमारे क्या कर्तव्य होना चाहिए, इसकी आवश्यकता पर बल दिया। पृथ्वी पर 70 प्रतिशत जल है लेकिन 0.03 प्रतिशत पानी ही आज पीने योग्य है। दिल्ली पूरे विश्व का सबसे प्रदूषित शहर है। हमें पानी हवा और मिट्टी को भी संरक्षित करना है। और देश को प्रदूषण मुक्त बनाना है। आपने धारणीय विकास की अवधारणा पर बल दिया। साथ ही पर्यावरण संरक्षण हेतु बनाए गए अधिनियमों की जानकारी दी, और कहा कि इसके लिए कानून तो बनाए जायें, किन्तु उससे भी ज्यादा आवश्यक यह कि हम अपने अंतःकरण से पर्यावरण के संरक्षण कि लिए सोचे कार्य करें। तभी हमारा पर्यावरण संरक्षित हो सकेगा। राष्ट्र के विकास में पर्यावरण को कभी नकारा नहीं जा सकता है, क्योंकि यह राजनीतिक या सामाजिक विचारों का समूह है जिसकी बुनियाद वैज्ञानिक है। अतः यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा, कि पर्यावरण वाद व्यक्ति तथा समाज के समस्त जीवन को प्रभावित करता है। वर्तमान काल में पर्यावरण की जो समस्याएं सामने आई हैं, उनमें जनसंख्या विस्फोट, जटिल आधुनिक हथियार, वायु, जल और ध्वनि प्रदूषण तथा प्राकृतिक संसाधनों का विनाश प्रमुख है। ये समस्याएँ मानव के अस्तित्व के लिए खतरा पैदा करती हैं। अतः पर्यावरण का संरक्षण एवं सुधार मानवता को जीवित रखने के लिए और उसकी सेहत के लिए अति आवश्यक है। वायु जल और भूमि संबंधी प्राकृतिक संसाधनों का उपभोग बहुत बुद्धिमानी से करना चाहिए। ताकि हम वर्तमान और भविष्य की पीढ़ी के लिए एक स्वस्थ पर्यावरण सुनिश्चित कर सकें।

## राज्य स्तरीय कार्यशाला पर्यावरण संरक्षण एवं जनचेतना



पर्यावरण की गुणवत्ता जीवन की गुणवत्ता है। पर्यावरण अवनयन तथा प्रदूषण विश्वस्तरीय चिंता का विषय ही नहीं, अपितु प्राणीमात्र के समस्त जीवन के लिए खतरा बन चुका है। पर्यावरण संरक्षण हेतु चहुँ ओर प्रयास किए जा रहे हैं। पर्यावरण के विभिन्न पक्षों एवं तथ्यों का संभावित संतुलन इस प्रकार किया जाए। जिससे प्रौद्योगिक स्तर पर अति विकसित आर्थिक मानव एवं पर्यावरण के बीच अंतर्क्रियाओं द्वारा पर्यावरण संरक्षण की प्रक्रिया सही रूप से क्रियान्वित की जा सके। पर्यावरण संरक्षण की जागरूकता इसका पहला चरण है। इन्ही उद्देश्यों को ध्यान में रखकर शासकीय मानकुर बाई कला एवं वाणिज्य स्वशासी महिला महाविद्यालय, जबलपुर के आंतरिक गुणवत्ता आश्रयिणी प्रकोष्ठ द्वारा “पर्यावरण संरक्षण एवं जनचेतना” विषय पर द्वि-दिवसीय राज्य स्तरीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

## कार्यशाला की रूपरेखा

दिनांक 05, 06 अप्रैल 2016

### कार्यक्रम दिनांक 05/04/2016

- उद्घाटन सत्र  
समय 11:30 बजे से
- मुख्य अतिथि  
डॉ. एन.पी. शुक्ला  
(पूर्व अध्यक्ष, म.प्र. प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड)
- मुख्य वक्ता  
डॉ. आर. के. श्रीवास्तव  
(विभागाध्यक्ष, पर्यावरण विज्ञान,  
शास. आदर्श विज्ञान महाविद्यालय, जबलपुर)
- अध्यक्ष  
डॉ. उषा दुबे, प्राचार्य  
शासकीय मानकुर बाई कला एवं वाणिज्य स्वशासी  
महाविद्यालय, जबलपुर)

- भोजन अवकाश  
समय 01:30 बजे से 02:30 बजे तक
- तकनीकी सत्र  
समय 02:30 बजे से 05:00 बजे तक
- विषय विशेषज्ञ  
डॉ. संजय वर्मा

### कार्यक्रम दिनांक 06/04/2016

- तकनीकी सत्र  
समय 10:30 बजे से 2:30 बजे तक
- समय सत्र  
समय 03:00 बजे से
- मुख्य अतिथि  
डॉ. के.एल. जैन  
अतिरिक्त संचालक, जबलपुर संभाग उच्चशिक्षा विभाग  
डॉ. प्रियांश जोशी

पंजीयन शुल्क- 200 रु. प्रतिभागी शिक्षक, 100 रु. प्रतिभागी शोधार्थी/विद्यार्थी